8

हर बात में परमेश्वर को महिमा दो (1 पतरस 4:1-11)

एक जवान पिता ने एक बार मुझ से कहा, ''मुझे यदि केवल जीवन पर चित्र मिल जाए।'' यह आदमी चिन्तित था। ऐसा लगा जैसे कि उसे अपनी पत्नी और बच्चों के साथ सुस्ताने का समय कभी नहीं मिला। जब उसका कारोबार इतना बड़ा नहीं था तब भी उसे लगता था कि उसे बहुत व्यस्त रहना चाहिए। उसका जीवन दिन-ब-दिन उसके काम पर केन्द्रित और उसके परिवार से दूर होता चला गया। उसके मन में था कि वह कम महत्वपूर्ण बातों के लिए जीवन की अधिक महत्वपूर्ण बातों को त्याग रहा है। समस्या यह थी कि उसे पता नहीं था कि इसे बदले कैसे। लगा कि वह योजना के बजाय मज़बूरी से अधिक काम करता था। उसे श्रेय दिया जाना चाहिए कि उसने अपने बारे में सही अनुमान लगाया था। उसे जीवन पर एक बेहतर चित्र की आवश्यकता थी।

कोई भी अपने जीवन को बदलने वाला को तैयार नहीं होता, जब तक उसे समझ न आए कि कुछ गलत हुआ है। चाहे हम पाप में पकड़े जाएं या केवल जीवन की अधिक महत्वपूर्ण बातों से पीछे हट जाएं, हमें बुरी आदतों को छोड़ने के लिए संसाधनों की आवश्यकता होती है। पतरस ने अपने पाठकों को पाप की पकड़ और छितराव को जो कभी उनके जीवनों पर था, उतारने में इस प्रकार से सहायता की। उसने उन्हें याद दिलाया, ''सब बातों का अन्त तुरन्त होने वाला है'' (4:7)। यह जीवन को एक नया रूप दे देता है। नये नियम की कलीसिया यह विश्वास करते हुए की वह शीघ्र आ रहा है, अपने प्रभु के वापस आने की राह सरगर्मी से देख रही थी।

अपने आप को मसीह के उद्देश्य के साथ लैस कर लो (4:1-3)

कोई भी जिसने सशस्त्र संघर्ष में होने वाली मृत्यु और कष्ट को देखा हो, उस अनुभव से प्रकाश नहीं करता। पतरस ने मसीही संघर्ष की गम्भीरता को कम आंका जब उसने नैतिक भलाई और व्यक्गित निष्ठा के नमूने बनने के लिए अपने पाठकों से आग्रह करने के लिए युद्ध के मैदान के शब्द को चुना। उन्हें मसीह के उद्देश्य या मंशा के साथ अपने आपको लैस करना था (4:1)। यह विचार फिलिप्पियों 2:5 वाला ही है कि ''जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था, वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।''

4:1 में पतरस का विचार (1) मसीह के कष्ट से (2) मसीही लोगों के उसकी मंशा के साथ लैस होने से (3) पाप के कष्ट और त्यागने तक आगे जाता है। इन विचारों के सम्बन्ध को पहचानने का अर्थ आयत 1 को समझ लेना है, परन्तु यह कोई छोटी बात नहीं है। पहले दो विचार इस प्रकार जुड़ सकते हैं: जैसे मसीह ने कष्ट का सामना किया, उसने अपने लोगों के लिए एक नमूना ठहरा दिया कि कष्ट आने पर उन्हें क्या करना है। कष्ट उठाने के समय मसीही लोगों को

न केवल सहने के लिए, बल्कि कष्ट पर अपने दृष्टिकोण को रखने के लिए भी उसकी मंशा के साथ लैस होना आवश्यक है। पत्री में कहीं और कहने की तरह, पतरस ने मानने के लिए अपने लोगों के उदाहरण के रूप में मसीह की ओर ध्यान दिलाया।

आयत 1 का अन्तिम भाग और कठिन है: ''... जिसने शरीर में दुख उठाया वह पाप से छूट गया।'' आयत के इस भाग की कम से कम दो व्याख्याएं होती हैं। (1) शायद इसका अर्थ यह है कि कष्ट का मसीही व्यक्ति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जिसने मसीह के लिए दुख उठाया है उसमें पाप का सामना करने की सामर्थ और समाधान है, जो उसे मसीह के बाहर नहीं मिलता। वह पाप से इस अर्थ में छूट गया है कि अब संसार और शरीर का उस पर वह नियन्त्रण नहीं है, जो पहले कभी था।

(2) एक और सम्भावना है कि ''शरीर में, दुख उठाया'' वाक्यांश मृत्यु यानी पाप के पुराने मनुष्य की आत्मिक मृत्यु के लिए रूपक है। यदि ऐसा है तो पौलुस मसीही व्यक्ति की पाप से मृत्यु को उस जीवन से अलग कर रहा था जो उसे प्रभु में मिलता है। अगली आयत में (4:2) उसने मसीही व्यक्ति के जीवन का विवरण दिया है। इसके अलावा अगले संदर्भ (3:21) में पतरस ने बपतिस्मे का उल्लेख किया। रोमियों 6 में पौलुस ने बपतिस्मे को पाप के पुराने मनुष्य की मृत्यु तथा नये जीवन के पुनरुत्थान के रूप में दिखाया। रोमियों 6:7 में ऐसी ही आवाज सुनाई देती है: ''क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूट कर धर्मी ठहरा।'' इस आयत की और 1 पतरस 4:1 के शब्दों में कई बातों पर समानता है। पौलुस ने कई साल पहले रोम के मसीही लोगों के नाम अपना पत्र लिखा था। हर सम्भावना है कि पतरस ने इसे पढ़ा होगा। इन कारणों से दूसरी व्याख्या अधिक सही लगती है।

कोई संदेह नहीं कि पाप का पुराना जीवन मसीही व्यक्ति को मसीह में मिले जीवन के लिए धन्यवाद दे सकता है, परन्तु पुरानी आदतों को छोड़ना कठिन है। पतरस ने अपने पाठकों को याद दिलाया कि उन्होंने अपने जीवन का काफ़ी भाग लुचपन मतवालापन और लीलाक्रीड़ा की अभिलाषाओं में बिताया था (4:3)। पुराने जीवन की यह अभिलाषा आज भी उन्हें तंग करती और उनके लिए बोझ थी। मसीह में जीवन पुराने जीवन से मृत्यु की मांग करता था। उन्हें उसकी ओर आने के लिए या तो परीक्षा का सामना करना या उसके साथ अर्थात जीवन के उस ढंग से समझौता करना था।

छितराव के जीवन से इनकार करना (4:4-6)

एशिया माइनर के यूनानी नगरों में सामाजिक और समुदायिक जीवन का सीधा सम्बन्ध मूर्तियों की पूजा और मतवालेपन तथा कामुकता से था जिसके साथ कई बार पूजा भी जुड़ी होती थी। मूर्तिपूजक लोग सार्वजनिक समारोहों तथा खेलों में भाग लेने से मसीही व्यक्ति के इनकार को अपने आपको बड़ा और समुदायिक सोच की कमी के अर्थ में देखते थे।

दूसरी शताब्दी के मध्य में साहित्य शास्त्री एलियस अरिस्टाइड्स ने अपने संसार के दोषदर्शी दार्शनिकों के साथ-साथ नये मसीही लोगों की भी आलोचना की। उसने कहा:

> उनका व्यवहार फलस्तीन में परमेश्वर की निन्दा करने वाले लोगों से बहुत मिलता है। वे

[अर्थात, मसीही लोग] भी बाहरी चिह्नों के द्वारा अपनी नास्तिकता को दिखाते हैं कि वे उन्हें जो उन से ऊपर हैं, पहचानते नहीं हैं और वे अपने आपको यूनानियों तथा हर अच्छी बात से अलग करते ५हैं।[1]

इन शब्दों के साथ पतरस के एक निकट समकालीन अरिस्टाइड्स ने प्रेरित द्वारा सुझाए गए हर कारण के लिए मसीही लोगों पर आरोप का ढेर लगा दिया कि "वे अचम्भा करते हैं, कि तुम ऐसे भारी लुचपन में उनका साथ नहीं देते" (4:4)।

मुंह से भला-बुरा कहना, जैसे अरिस्टाइड्स ने कहा, एक बात थी, परन्तु बुरा-भला कहने के अलावा कई बार शारीरिक ताड़ना भी दी जाती थी। मसीही लोग अधिकतर अपनी संख्या यूनानी नगरों के निर्धन और दलितों के साथ बढ़ाते थे। उच्च वर्ग के लोग निर्धन और कमज़ोर लोगों को तुच्छ मानते थे। पतरस के अपना पत्र लिखने के बाद पन्द्रह सालों से भी पहले वेसुवियुस पर्वत के पास गाड़े गए एक व्यक्ति ने पौम्पयी की एक दीवार पर लिखा था, "मुझे निर्धन लोगों से घृणा है। यदि कोई कुछ दिए बिना कुछ चाहता है, तो वह मूर्ख है। वह कीमत चुकाए और उसे मिल जाएगी।" मसीही लोगों के पास निर्धन होने का अतिरिक्त चिह्न था। पतरस ने यह कहते हुए इन लोगों को तसल्ली देने की पेशकश की कि जो लोग मसीही लोगों को सताने वाले हैं "वे उसको जो जीवतों और मरे हुओं का न्याय करने को तैयार है, लेखा देंगे" (4:5)।

मसीही लोगों के लिए जो इक्कीसवीं शताब्दी में रहते हैं, इस सबका क्या अर्थ है। मुझे नहीं लगता कि इक्कीसवीं सदी के मसीही लोगों पर पहली सदी के मसीही लोगों से संसार के लुचपन और लीलाक्रीड़ा में भाग लेने से कम दबाव है। शराब से इनकार करने वाले, मनोरंजन चुनने में सावधान, हिंसा और शाम को अपने घरों में टेलीविज़न के कामुक कार्यक्रमों को अनुमति देने से इनकार करने वाले, लॉटरी या मांग करने पर गर्भपात के विरुद्ध सरकार के समर्थन का विरोध करने के लिए आवाज़ उठाने वाले, उन नियमों का समर्थन करने वाले या विरोध करने वाले लोगों को अजीब माना जाएगा। उन पर लोगों से सहमत होने का दबाव पड़ेगा। किसी भी युग की तरह इक्कीसवीं शताब्दी के लोगों को 4:1-6 में पतरस की ताड़नाओं की ओर ध्यान देना आवश्यक है।

4:6 में हम पढ़ते हैं, "क्योंकि मरे हुओं को भी सुसमाचार इसीलिए सुनाया गया कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उनका न्याय हो, पर आत्मा में वे परमेश्वर के अनुसार जीवित रहें।" इस आयत को समझने का हमारा ढंग 3:19, 20 की हमारी व्याख्या से प्रभावित होना आवश्यक है। यदि उन आयतों का अर्थ है कि मसीह अपनी विजय की घोषणा करने के लिए निचले संसार में नीचे उतरा, तो 4:6 कहता है कि उसका वहां जाना मरे हुओं के "परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आत्मा में जीने" के योग्य होने का कारण बना। क्या हम यह निष्कर्ष निकालें कि हम मसीह के बाहर मर सकते हैं, पाप में खो सकते हैं और मरने के बाद मन फिराने और उद्धार पाने का हमें एक और अवसर दिया जाएगा? लगता नहीं है! इस आयत को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि वाक्य बदल जाते हैं। सुसमाचार उनमें "प्रचार किया" गया था, जो "मरे हुए हैं।" पतरस के अपना पत्र लिखने के समय वे मरे हुए थे। आयत में ऐसा कोई सुझाव नहीं है कि वे सुसमाचार सुनाए जाने पर मर गए थे।

यदि 4:6 यह सिखाता है कि लोग मरने के बाद मन फिरा सकते हैं और उद्धार पा सकते हैं, तो यह नये नियम में और कहीं अपनी ही शिक्षा का विरोध करता है। इब्रानियों 9:27, 28 कहता है, ''जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है। वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिए एक बार बलिदान हुआ और जो लोग उस की बाट जोहते हैं, उनके उद्धार के लिए दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा।'' यूहन्ना 5:28, 29 में यीशु ने उनकी बात की जो कब्र में उसकी आवाज़ को सुनेंगे, जिनमें से कुछ जीवन के पुनरुत्थान के लिए बाहर आएंगे और अन्य दण्ड के पुनरुत्थान के लिए। उसके शब्दों में मृत्यु के पश्चात किसी के मन परिवर्तन की अनुमति नहीं है। अन्य आयतें (1 थिस्सलुनीकियों 4:13–18; रोमियों 2:3; 14:10; 1 कुरिन्थियों 4:5; 2 कुरिन्थियों 5:10; 2 पतरस 3:7) यही बात सिखाती हैं। हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि पतरस कह रहा था कि सुसमाचार उन लोगों में सुनाया गया था जो तब से मरे हुए थे। यदि उन्हें उनके शरीर में किए गए कामों के अनुसार न्याय देना था तो वह खोए हुए होते थे, परन्तु क्योंकि उन्होंने सुसमाचार पर विश्वास किया और इसे माना था, इसलिए उनका उद्धार होना था। पतरस ने कहा कि उन्होंने ''परमेश्वर की इच्छा के अनुसार'' जीवन बिताना था।

समझें कि सब बातों का अन्त तुरन्त होने वाला है (4:7-11)

मसीही लोग केवल प्रभु के वापस आने की राह ही नहीं देखते, बल्कि वे उसकी स्पष्ट वापसी की राह देखते हैं। ऐसा आरम्भ से है। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों की समाप्ति दो आरामी शब्दों *माराना था,* जिसका अर्थ है ''हे प्रभु, आ'' से की। बाइबल की अन्तिम पुस्तक के अन्तिम शब्दों में ये शब्द पाए जाते हैं: ''हे प्रभु यीशु आ'' (प्रकाशितवाक्य 22:20)। पौलुस ने कहा, ''हे भाइयो, मैं यह कहता हूं कि समय कम किया गया है'' (1 कुरिन्थियों 7:29)। याकूब ने जोड़ा है, ''अपने हृदय को दृढ़ करो, क्योंकि प्रभु का शुभ आगमन निकट है'' (याकूब 5:8)। जब आरम्भिक कलीसिया प्रभु की स्पष्ट वापसी की राह देख रही थी, तो वे वही कर रहे थे, जो यीशु ने उन्हें करने को कहा था। उसने उनसे कहा था, ''क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा'' (मत्ती 24:42)।

लगभग दो हज़ार साल बीत चुके हैं और उसकी कलीसिया आज भी गा रही है, ''यीशु जल्द आने वाला है।'' कलीसिया एक ''युगांत विज्ञानी समुदाय'' है, जिसका अर्थ है कि यह आरम्भ से ही समय के अन्त में रहती है। यह कोरी कल्पना नहीं है कि प्रभु एक दिन आएगा, जो मसीही जीवन को परिप्रेक्ष्य और सामर्थ देती है। यह तो ''सब बातों का अन्त तुरन्त होने वाला है'' (4:7)। अवश्य मानने वाली बातों को मानने की अनिवार्यता को सामर्थ इसी अहसास से मिलती है।

सचेत रहो

यीशु के दुष्टात्मा से ग्रस्त एक आदमी को चंगा करने के बाद, मरकुस ने लिखा कि नगर के लोग यह देखने के लिए आए कि क्या हुआ है। जब वे वहां पहुंचे तो उन्होंने उस आदमी को जिसमें दुष्टात्माओं की सेना थी ''कपड़े पहिने और सचेत बैठे'' (मरकुस 5:15) पाया।

अनुवादित शब्द ''सचेत बैठे'' वही शब्द है, जिसका अनुवाद 4:7 में ''सचेत रहो'' या ''स्पष्ट सोच रखो'' (NIV) हुआ है। पतरस अपने पाठकों से अपने सचेत मनों में विवेकी, दृढ़, विश्वसनीय बनने का आग्रह कर रहा था।

यह समझ आने पर कि सब बातों का समय निकट है हमें ''संयमी होकर प्रार्थना के लिए सचेत रहना'' आवश्यक है। एक मसीही के रूप में इन शब्दों में एक गम्भीर अर्थात जीवन का तर्कसंगत डर है। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *व्राइटिज़ ऑफ़ रिलिजियस एक्सपीरियंस* में ढूंढ़ा कि धार्मिक होने का क्या अर्थ है। कई बातों को अलग करने और उनकी समीक्षा करने के बाद उसने जोड़ा कि धर्म का एक आवश्यक गुण है कि यह स्वयं को गम्भीरता से लेता है। मसीहियत एक फीका धर्म नहीं है बल्कि यह अपने संदेश, अपनी उम्मीदों, अपनी आशाओं और अपने भय को गम्भीरता से लेता है। ऐसा झुकाव इसे स्वाभाविक रूप से प्रार्थना की ओर ले जाता है, क्योंकि प्रार्थना धर्म का विशुद्धतम रूप है।

एक-दूसरे से उत्सापूर्वक प्रेम करें

प्रेम की कोई परिभाषा नहीं है। इसमें भावना का वह बंधन है, जो व्यक्ति को किसी दूसरे की भलाई चाहने के लिए समर्पित कर देता है और इसमें स्व-बलिदान करने वाले मन की उदारता मितली है। इससे अधिक कहना कठिन है। एशिया माइनर की कलीसियाओं द्वारा सहे जाने वाले क्लेश और सताव के समय मसीही लोगों को एक-दूसरे से और प्रभु के साथ प्रेम के बन्ध में बने रहने का दबाव इससे बढ़कर कभी नहीं था। जब छोटी छोटी चिड़चिड़ाहट और मानवीय दुर्बलताएं देह की एकता की परीक्षा ले रही थीं, तो पतरस ने कहा कि ''प्रेम अनेक पापों को ढांप देता है'' (4:8)।

सत्कारशील बनें

अजनबियों और अतिथियों के लिए घर और उन सब लोगों का पूरा अतिथि सत्कार करना प्राचीन काल से पूर्व के लोगों के लिए बड़ा पवित्रता भरा काम रहा है। उत्पत्ति 18:1-8 में अब्राहम के तम्बू के द्वार पर दो अजनबियों का मिलना इस कथा को बेहतर ढंग से दिखाता है। स्पष्टतया इब्रानियों की पुस्तक के लेखक के मन में यही घटना थी, जब उसने लिखा, ''पहुनाई करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कितनों ने अनजाने, स्वर्गदूतों की पहुनाई की है'' (इब्रानियों 13:2)।

4:9 में पतरस की इस ताड़ना से आरम्भिक कलीसिया के भ्रमणशील शिक्षकों और नबियों की उपस्थिति लौट आई होगी। यूहन्ना के पत्र लिखे जाने के समय तक कलीयिसा में भ्रह्मणीशल शिक्षकों का सत्कार करने वाला होने की मसीही जिम्मेदारी कलीसिया में एक मुद्दा बन चुका था। यूहन्ना ने चेतावनी दी कि बहुत से झूठे भविष्यवक्ता संसार में निकल आए थे (1 यूहन्ना 4:1)। यूहन्ना की दूसरी और तीसरी पत्री इस बात पर कि मसीही लोगों को इन घुमक्कड़ नबियों की पहुनाई कब करनी चाहिए, और कब नहीं करनी चाहिए कुछ उलझन को दिखाती है।

परमेश्वर से मिले दान का इस्तेमाल करें

चाहे पतरस ने केवल दो दानों पर जो मसीही लोग पा सकते थे (अर्थात, बोलना और सेवा

करना) पर ही विस्तार से बताया। परन्तु नि:संदेह उसे यह समझ थी कि और भी कई दान हैं। नये नियम की सबसे दृढ़ शिक्षाओं में से एक है कि मसीही लोगों को मिलने वाले तोड़े अलग-अलग होते हैं। परन्तु हमें जो भी तोड़ा मिला हो, उसे खुले मन से प्रभु को देना हमारी ज़िम्मेदारी है। हम इन में से कुछ अधिक प्रसिद्ध आयतों की संक्षिप्त समीक्षा से लाभ ले सकते हैं।

लूका 12:48 में यीशु की चेतावनी हमारा ध्यान खींचती है: ''जिसे बहुत दिया गया है उससे बहुत मांगा जाएगा।'' लूका रचित सुसमाचार में मुहरों के दृष्टांत के बाद यह चेतावनी है (लूका 19:11-27) जबकि मसीह में हम इसे तोड़ों के दृष्टांत में देखते हैं (मत्ती 25:14-30)। इन दृष्टांतों के विवरण तो अलग हैं, पर संदेश वही है कि परमेश्वर द्वारा प्रभु की सेवा में दिए गए तोड़ों का इस्तेमाल न कर पाने से परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध बिगड़ता है।

रोमियों 12:6 में पौलुस ने लिखा, ''उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं।'' फिर उसने उन कुछ दानों के नाम बताए, जो उसके पाठकों को मिले होंगे, और साथ ही उन्हें इस्तेमाल करने की ज़िम्मेदारी भी विस्तार से बताई। 1 कुरिन्थियों 12:4 में उसने कहा, ''वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है।'' 12:7 में उसने जोड़ा, ''किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।''

4:10, 11 में अपने पाठकों के लिए पतरस के निर्देश में परमेश्वर द्वारा दिए गए तोड़ों के इस्तेमाल में मसीही ज़िम्मेदारी सिखाई गई है। दोनों दानों पर पतरस के निर्देश में अन्तर यह है कि उसने इस बात पर ध्यान दिलाया जिसे इन सब का सार माना जा सकता है: बोलना और सेवा करना। मसीही व्यक्ति के लिए जिसे बोलने का दान मिला था, पतरस ने उसकी ज़िम्मेदारी की गम्भीरता पर ज़ोर दिया: ''ऐसे बोले, मानो परमेश्वर का वचन है'' (4:11)। KJV में, ''ऐसा बोले जैसे परमेश्वर की वाणी हो,'' और NIV में, ''उसे इसे ऐसे बोलना चाहिए जैसे परमेश्वर का वचन बहा रहा हो'' है। प्रचारक या शिक्षक जो परमेश्वर द्वारा प्रकट किए गए संदेश के अलावा किसी और संदेश पर निर्भर रहता है, वह प्रेरित के इस निर्देश की अवहेलना कर रहा है।

हर मसीही में सार्वजनिक रूप में बोलने या सिखाने की योग्यता नहीं होती, परन्तु हर कोई परमेश्वर और उसके लोगों की सेवा में कुछ योग्यता लगा सकता है। पतरस ने कहा, ''यदि कोई सेवा करे तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है'' (4:11)। ''सेवा'' का अनुवादित शब्द ''डीकन'' के लिए यूनानी शब्द के क्रिया रूप से लिया गया है, परन्तु पतरस ने अपनी टिप्पणियां डीकनों की ज़िम्मेदारियों तक सीमित नहीं रखी हैं। सेवा करना परमेश्वर के राज्य में बड़ा बनने के लिए रास्ता है (मत्ती 20:25, 26)। यदि हम परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं, तो हमें उस आशा की जो हमें मिली है दूसरों को समझाने के लिए जो भी तोड़े मिले हैं, उनका इस्तेमाल करना आवश्यक है।

सारांश

1 पतरस के दो मुख्य विषय मसीही लोगों का कष्ट और प्रभु की वापसी, 4:1-11 के संदेश का आधार हैं। मसीह के कष्टों का संकेत देने के बाद पतरस ने मसीही लोगों से पिछले पापों के लिए मर जाने का आग्रह किया जो उनके जीवन पर राज करते थे। परमेश्वर के लोग यदि पतरस की सुनें तो वे विरोध और सताव का उत्तर पवित्रता के जीवन बिताने की नई दृढ़ता के

साथ दे सकते हैं।

क्योंकि पतरस और पहली सदी के मसीही लोगों का विश्वास था कि प्रभु शीघ्र लौट आएगा, इसलिए प्रेरित की ताड़ना में यह बात जोड़नी आवश्यक थी। उनके पास थोड़ा समय था। जो कुछ भी किया जाना था, वह जल्द किया जाना था। उद्धार पाने के इच्छुक लोगों को सिखाया जाना था। उन्हें प्रभु से भेंट करने के लिए अपने को तैयार करना था। 1:6 में पतरस ने उन्हें मसीह के उस बड़े आनन्द की बात याद दिलाई थी, जो उनके जीवनों में आया था, परन्तु फिर उसने जोड़ा, ''यद्यपि आवश्य है कि अभी कुछ दिन के लिए नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण दुख में हो।'' कष्ट केवल कुछ समय के लिए था। सब बातों का अन्त निकट था। तब और आज कलीसिया का उत्तर यही था कि प्रभु शीघ्र लौट रहा है। हम अन्त के समय में रहते हैं। यह समझ मसीही व्यक्ति को उस पर जो उसके पास है, और जो उसने सीखा है और वह जो अपने जीवन के साथ करता है, एक सही सोच देती है। ''आमीन, हे प्रभु यीशु आ।''

टिप्पणी

[1]एलियस अरिस्टाइड्स *ओरेशंस* 46.